सामान्यीकरण

4

अशोनी कुमार*
मिथलेश**

सामान्यीकरण इतिहासकारों के काम करने के उन तरीकों का एक महत्वपूर्ण पहलू है जिन्हें मार्क ब्लॉक इतिहासकारों के 'व्यापार की रीति' कहते हैं। यह एक जटिल और व्यापक विषय है जो इतिहासकारों के कौशल के लगभग सभी पक्षों पर असर डालता है। ''सामान्यीकरण असंबद्ध और अस्पष्ट तर्कों का काल और दिक् में आपस में जुड़ना है। यह उनका समुह है, उनका तार्किक वर्गीकरण है। सामान्यतः सामान्यीकरण तथ्यों के बीच का संबंध या संपर्क है, यह एक प्रकार का निष्कर्ष है या मार्क ब्लॉक ''यह प्रक्रियाओं के बीच उदाहरण प्रस्तुत करने वाला संबंध है।'' यह किसी प्रकार की व्याख्या या कार्य–कारण मीटीवेशन या प्रभाव या असर बनाने वाला के लिए किए गए प्रयासों का परिणाम है।''[1]

जब हम 'तथ्यों' या आँकड़ों या प्रक्रियाओं को वर्गीकृत करते है और उनकी तुलना या मिलान करते है या उनके बीच की समानताएँ और विषमताओं की खोज करते हैं और उन पर आधारित निष्कर्ष निकालते है तब हम इन दो बेहद प्राथमिक कामों के साथ ही सामान्यीकरण करने में शरीक हो जाते हैं। इस तरह हम सामान्यीकरण तब करते है जब हम अपने तथ्यों को एक के बाद एक श्रृंखला में पिरोते जाते हैं। उदाहरण के लिए जब हम किसी नेता की जाति या धर्म की बात करते हैं तब हम सामान्यीकरण कर रहे होते है

सामान्य अर्थ

इतिहास के सामान्य अर्थ में इतिहास तथ्यों का वष्तांत एवं मूल्यांकन के अतिरिक्त तथ्यों का सामान्यीकरण भी है। ''इतिहास को अधिकाधिक विज्ञान बनाने की दिशा में यह सार्थक कदम है। इसके अन्तर्गत हम विशेष से सामान्य की ओर बढ़ते है तथा तर्कशास्त्र के निगमानात्मक और आगमनात्मक पद्धति का सहारा लेते हैं। उदाहरण स्वरूप हम राम, श्याम और रहीम को मरते देखकर यह निष्कर्ष निकालते हैं कि सभी मनुष्य मरणशील है। इतिहास में भी हम इसी तरह का सामान्यीकरण करते हैं, उदाहरण स्वरूप 1789 ई0 की फ्रांसीसी क्रान्ति, 1911 ई0 की चीनी क्रान्ति एवं 1917 ई0 की रूसी क्रान्ति के अध्ययन से हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते है कि असंतोष और आक्रोश क्रान्ति को जन्म देते है। इसे ही तथ्यों का सामान्यीकरण कहते हैं।''[2] ये ऐतिहासिक तथ्य अधिकाधिक वस्तुनिष्ठ एवं वैज्ञानिक होते हैं। इसमें इतिहास का पूर्वाग्रह नहीं चलता, वह अपने ढंग से इतिहास की व्याख्या नहीं कर सकता। ''एक इतिहासकार लिखता है–इतिहासकार ऐतिहासिक तथ्यों को दस्तावेजों, अभिलेखों से ग्रहण करता है तथा अपने पाठकों के सामने अपने ढंग से पेश करता है।''

* *शोधार्थी, इतिहास विभाग, राज0 मायावती स्ना0 कालिज, बादलपुर, नोयडा, गौतमबुद्ध नगर*
** *शोधार्थी, समाजशास्त्र विभाग, वी0एम0एल0जी0 पीजी कालिज, गाजियाबाद*

''भाषा का प्रयोग करते ही वैज्ञानिक की तरह ही इतिहासकार भी सामान्यीकरण करने को बाध्य हो जाता है। पिलोपोनेशिया युद्ध और द्वितीय विश्वयुद्ध एक दूसरे से पूर्णतया भिन्न थे और दोनों ही विशिष्ट थे। मगर इतिहासकार इन दोनों को युद्ध कहता है, और कोई कठमुल्ला ही इस पर ऐतराज करेगा। गिबन ने जब ईसाई धर्म की स्थापना और इस्लाम के उत्थान की क्रान्ति की संज्ञा दी थी तो उसने दो विशिष्ट ऐतिहासिक घटनाओं का सामान्यीकरण ही किया था।

सामान्यीकरण के विभिन्न स्तर

सामान्यीकरण साधारण या जटिल हो सकते है या सामान्यीकरण के विभिन्न स्तर हो सकते हैं।

निम्न स्तरीय सामान्यीकरण

निम्न स्तरीय सामान्यीकरण तब होता है ''जब हम किसी तथ्य या घटना को किसी खाँचे में डालते हैं, उसका वर्गीकरण करते है या उसे कालबद्ध करते हैं। उदाहरण के लिए किन्हीं तथ्यों को आर्थिक कहना, किसी व्यक्ति को किसी जाति, क्षेत्र, धर्म या पेशे से जोड़कर देखना या यह कहना कि अमुक घटना किसी एक विशेष वर्ष, दशक या शताब्दी में हुई थी''।

मध्य स्तरीय सामान्यीकरण

मध्य स्तरीय सामान्यीकरण तब होता है जब कोई इतिहासकार किसी विषय के अध्ययन के लिए उसके विभिन्न तत्वों के बीच अर्न्तसम्बन्ध खोजने का प्रयास करता है, उदाहरण के लिए जब हम किसी विशेष समय, स्थान या चरित्र से जुड़े सामाजिक यथार्थ के अंश का अध्ययन कर रहे होते हैं इस सन्दर्भ में उदाहरण के लिए 1929–37 तक पंजाब में किसान आंदोलन–बहुत हुआ तो इतिहासकार आगे और पीछे के संबंधों और कड़ियों को देख सकता है।

लेकिन उसे अपने को विषय वस्तु तक सीमित रखना होगा। वर्ग चेतना, हित समूह, पूँजीवाद, उपनिवेशवाद, राष्ट्रवाद और सामंतवाद जैसे विषयों को शोध से नहीं परखा जा सकता सिवाय उन मध्य स्तरीय सामान्यीकरणों के जैसे 1920 के दशक में जमशेदपुर में मजदूरों, 1930 के दशक में भारत में औद्योगिक पूँजीवाद का विकास और 1930 के दशक में भारत में श्रमिक कानूनों के बनने से संबंधित सामान्यीकरण।

व्यापक स्तरीय सामान्यीकरण

यह तब होता है जब इतिहासकार समाज को बाँधने वाली संभावी व्यापक सूत्रों और महत्वपूर्ण संबंधों तक पहुँचते हैं। यह इतिहासकार किसी पूरे युग में समाज के आर्थिक राजनीतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक एवं परिस्थितिकीय सूत्रों का अध्ययन करने का प्रयत्न करते है। इतिहासकार जब किसी सीमित विषय का अध्ययन कर रहे हो तब भी वह इन सूत्रों का राष्ट्रव्यापी समाजव्यापी और यहाँ तक कि विश्वव्यापी दृश्य उकेरने का प्रयत्न करते हैं। कई बार जब वह सीमित विषय का अध्ययन करते है तब यह व्यापक सामान्यीकरण उनके दिमाग में होते हैं। उदाहरण के लिए जब कोई यूरोपीय विज्ञान एशियाई या अफ्रीकी समाज

के किसी विशिष्ट सामाजिक या धार्मिक पहलू का अध्ययन करता है तो एशिया और अफ्रीका की व्यापक प्राच्यवादी समझ उसके मस्तिष्क में होती है। इसी तरह जब कोई ब्रितानी विद्वान किसी विशेष काल में एशियाई देश के आर्थिक इतिहास को पढ़ता था या आज भी पढ़ता है तो उपनिवेशवाद की व्यापक समझ से प्रेरित होता है।

मेटा हिस्ट्री

मेटा हिस्ट्री अकसर अनैतिहासिक होती है क्योंकि वह इतिहास पर इतिहास से बाहर कर कोई सिद्धांत लादना चाहती है– यह सिद्धान्त इतिहास के ठोस अध्ययन से उभर कर सामने नहीं आता। कई बार कोई एक कारण या 'इतिहास का दर्शन' ही सभी ऐतिहासिक परिवर्तनों को समझाने के लिए काम में लाया जाता है। इस पद्धति के उदाहरण है : हीगल, स्पैगलर, टायनबी या ''द कलैश ऑफ सिविलइजेशन्स' पर हाल का लेखन। मार्क्स या वेबर की पद्वति मेटाहिस्ट्री के उदाहरण नहीं हैं क्योंकि वह ठोस इतिहास, समाज, राजनीति, विचारधारा आदि का विश्लेषण करने के लिए बने सिद्धान्त हैं।''[4]

सामान्यीकरण की उपयोगिता

विज्ञान में सामान्य और ब्रह्माण्ड की घटनाओं का वर्णन होता है लेकिन इतिहास में अद्वितीय और विशिष्ट घटनाओं को स्थान दिया जाता है। वस्तुतः इतिहासकारों में एक प्रवृत्ति होती है कि समान घटनाओं से सामान्यीकरण का चित्र प्रस्तुत करते हैं और उसी के अनुसार अपने साक्ष्यों का परीक्षण करते हैं। प्रसिद्ध ''इतिहासकार ई0एच0 कार की मान्यता है ''इतिहास लेखक एवं पाठक दोनों ही सामान्यीकरण की बीमारी से ग्रसित होते हैं जिसके कारण वे एक इतिहासकार के दृष्टिकोण को अन्य ऐतिहासिक घटनाओं के सन्दर्भ में प्रयुक्त करते हैं जिससे वे परिचित होते हैं और जो सम्भवतः उनके समय से सम्बन्धित होती है। यह कहना सर्वथा भ्रान्तिमूलक है कि सामान्यीकरण इतिहास के लिए उपयोगी नहीं है। वास्तव में इतिहास सामान्यीकरण पर ही फलता–फूलता है। ''सामान्यीकरण ही एक इतिहासकार को ऐतिहासिक तथ्यों को एकत्रित करने वाले से भिन्न करता है।''[5]

सामान्यीकरण से बचा नहीं जा सकता। सभी यह करते हैं और इनका इस्तेमाल करते है। यहाँ तक कि जब इतिहासकार सोचता है वह ऐसा नहीं कर रहा है तब भी वह सामान्यीकरण कर रहा होता है। ''सामान्यीकरण शब्दों के अनुक्रम में ही निहित होता है। एक अवधारणा है कि 'इतिहासकार को अतीत की जानकारियाँ एकत्रित करनी चाहिए और उन्हें तिथिवार क्रम में संजोना चाहिए। इससे या तो अतीत का अर्थ उभरता है या स्वयं को प्रकट करता है'।

इतिहास में सामान्यीकरण के द्वारा चयन इसलिए आवश्यक है क्योंकि 'तथ्य' बहुत सारे हैं। इसलिए हर इतिहासकार चयन करता है। इसके अलावा यह केवल तथ्यों के चयन का सवाल नहीं है। क्योंकि इससे यह आभास होता है कि तथ्य इतिहासकार के सामने बिखरे पड़े होते हैं, किसी थाल में सजे हो जैसे। वास्तव में इतिहासकार को उन्हें खोजना पड़ता है, जिससे यह निहित है कि चयन के कुछ सिद्धान्त होते हैं।''[6]

जनगणना की सांख्यिकी को ही लें। यह तथ्य जैसे लगते है लेकिन यर्थाथ में यह सामान्यीकरण के वह परिणाम है जो उन लोगों ने किए थे जिन्होंने यह तय किया था कि जनगणनाकर्मी किन शीर्षकों के तहत तथ्य एकत्रित करेगें। किसी भी तथ्य या समूह का उल्लेख किसी सामान्यीकरण को छिपाता है। ब्राह्मण तिलक कहने में ऐतिहासिक सामान्यीकरण शामिल हो जाता है। ऐसा कहने से यह नजरिया सामने आता है कि उनका ब्राह्मण होना उनकी राजनीति के लिए महत्वपूर्ण था। इसमें उत्प्रेरण का एक पूरा सिद्धान्त भी शामिल होता है जो यह दर्शाता है कि भारतीय लोग राजनीति में क्यों और कैसे संचालित होते हैं। यह भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन में ब्राह्मणों के वर्चस्व के सिद्धान्त को भी प्रतिपादित करता है।''[7]

किसी भी हाल में, जैसे ही हम नामों, तिथियों और महज गणना के परे जाते है सामान्यीकरण होने लगता है। अतः सामान्यीकरण के अभाव में हम आंकड़े एकत्रित करने वाले भर रह जाते है। सामान्यीकरण के बिना कोई जटिल विश्लेषण या व्याख्या ही नहीं वर्णन भी संभव नहीं है। इसी तरह किसी इतिहासकार के लिए सामान्यीकरण के बिना घटनाओं या संस्थाओं के सतही स्तर से गहरे जा पाना भी संभव नहीं है।

जब कोई नए तथ्य न खोजे गए हो तब भी दो या दो से अधिक इतिहासकर एक ही विशय या विचार पर काम कर सकते है। वह उसी सामग्री पर ताजे सामान्यीकरणों के साथ काम कर सकते है। यह बात विशेषकर प्राचीन एवं मध्ययुगीन इतिहासकारों के लिए महत्वपूर्ण है। नए स्रोतों एवं सामग्री की अनुपस्थिति में नए सामान्यीकरण एवं पद्धतियां नए षोध पैदा कर सकती है।''[8]

सामान्यीकरण से जुड़ी आपत्तियां

कुछ लोग सामान्यीकरण के विरूद्ध है और विभिन्न आपत्तियां उठाते है–

• ''पहली आपत्ति इस अवधारणा पर आधारित है कि तथ्यों को सामान्यीकरण से अलग करने की आवश्यकता है और सामान्यीकरणों को तथ्यों से निकलना चाहिए। इस आपत्ति का हम जवाब दे चुके है और दर्षा चुके हैं कि सामान्यीकरण ही तथ्यों को तथ्य बनाता है।

• सामान्यीकरण को स्पष्ट होना चाहिए ताकि उन पर खुली बहस हो सके।

• प्रमुख समस्या सामान्यीकरण के स्तर और प्रकार को लेकर है।

• किसी सामान्यीकरण की वैधता या प्रयोगात्मक स्वरूप या 'सत्य' और उसे वैध करार देने के लिए किस प्रमाण का इस्तेमाल हो रहा है।

• जब हम कहते हैं कि कोई विशेष इतिहासकार अच्छा इतिहासकार है तब हमारा आशय होता है कि वह एक इतिहासकार की निष्ठा और तकनीकी कौशल वाला होने के साथ–साथ बेहतर सामान्यीकरण करता है।

''सामान्यीकरण के आधार पर ही इतिहास एक विज्ञान के रूप में प्राप्त होता है। ई0एच0 कार ने तो यहाँ तक कह दिया है कि इतिहास यद्यपि विशेष से भी सम्बद्ध है, तो भी उसको सामान्यीकरण के सिद्धान्त से पृथक करना उपहासास्पद और मुर्खतापूर्ण है, वह सामान्यीकरण पर आधारित एवं विकसित होने वाला है। यद्यपि इसका सम्बन्ध विशेष से होता

है तो भी इसमें सामान्यीकरण के तत्व होते है। ऐल्टन ने इसी आधार पर इतिहासकार और ऐतिहासिक तथ्यों के संकलनकर्ता में अन्तर स्पष्ट किया है। प्रो0 ऐल्टन की इस विषय में पूर्ण सहमति को प्रो0 वाल्श राउस एवं शेक अली ने इस मान्यता के पक्ष में उद्धत किया है।''[10]

''किसी भी वैज्ञानिक पद्धति में अवलोकन, सत्यापन, वर्गीकरण, सामान्यीकरण, भविष्यवाणी एवं वैज्ञानिक प्रवृत्ति विशेषताएं मिलती है। इतिहास में परिकल्पना का निर्माण, आंकड़ों का संकलन, सामग्री का वर्गीकरण, सत्यापन और सामान्य नियमन सम्भव है, इसीलिए वह एक विज्ञान है। प्रो0 ई0एच0 कार ने इतिहास लेखन के विशय में बताया है कि यह अतीत के परिकल्पनात्मक पुननिर्माण का एकमात्र साधन है। इसको व्याख्या प्रधान बनाने के लिए इतिहासकार ऐतिहासिक तथ्यों का चयनशीलात्मक स्वरूप आवश्यक मानता है।''[11]

सामान्यीकरण की भूमिका

सामान्यीकरण जो कार्य करते है उनके सिवा इतिहास के विद्यार्थियों के लिए सामान्यीकरण के कुछ और लाभ भी है–

• ''यह उसके तथ्यों के संयोजन के सिद्धान्त प्रदान करते है जिससे इतिहासकारों की वह आधारभूत समस्या हल हो जाती है कि उनके द्वारा जुटाए गए अस्त–व्यस्त तथ्यों के अंबार को किस प्रकार व्यवस्थित ढंग से प्रस्तुत कैसे किया जाए।

• वह इतिहासकार की अभिकल्पना को पैना करते है या उसकी 'दृष्टि को व्यापक' बनाते है। वह लगातार बढ़ रहे यथार्थ के क्षेत्र को समझने की उसकी क्षमता बढ़ाते हैं और अधिकाधिक जटिल अंतरसंबंध तैयार करते है।

• वह इतिहासकारों को निश्कर्श निकालने, कार्य–कारण संबंध और परिणामों तथा प्रभावों की श्रृंखला स्थापित करने में सक्षम बनाते है। दूसरे शब्दों में, वह उन्हें प्रयुक्त तिथियों का विश्लेषण, व्याख्या और स्पष्टीकरण देखने में मदद करते हैं।

• अधिक सटीक कहें तो सामान्यीकरण इतिहासकारों को नए तथ्यों और स्रोतों को खोजने के लिए प्रेरित करते है। अक्सर नए तथ्यों और स्रेतों को नए सामान्यीकरणों की मदद से ही समझा जा सकता है। लेकिन अक्सर यह प्रक्रिया उल्टी होती है। सामान्य तौर पर नए सामान्यीकरणों की वजह से ही नई सामग्री की तलाश की राह बनती है।''[12]

• सामान्यीकरण इतिहासकारों को पुराने और जाने पहचाने तथ्यों के बीच नए संबंध कायम करने में भी मदद देते है। जब हम कहते है कि इतिहासकार ने पुराने तथ्यों पर नया प्रकाश डाला है तो हमारा तात्पर्य यही होता है कि इतिहासकार ने सुपरिचति तथ्यों को समझने के लिए नए सामान्यीकरण किए है।

• ''सामान्यीकरण इतिहासकारों को 'अनुभववाद' और 'अक्षरशः अनुसरणवाद' में बचाता है– अर्थात् स्रेतों को उनके पूर्ण स्वरूप और अक्षाशः अर्थ में लेने से बचाता है। इसके बदले इतिहासकार को अपने विवरण में उनका महत्व और प्रासांगिकता स्थापित करनी पड़ती है। उदाहरण के लिए (ब्रितासी) विदेशी शासन और उनके जीवनकाल के दौरान विदेशी पूँजी के प्रयोग पर दादा भाई नौरोजी का वक्तव्य। सामान्यीकरण का प्रयोग किए बिना इस वक्तव्य को

उसके ऊपरी अर्थ में लेने की प्रवृत्ति होती है जिसमें हम उन्हें क्रमानुसार एक के बाद एक उद्धत करते जाते है।

इतिहासकार नौरोजी की पद्धति के बारे में सामान्यीकरण करते हुए यह देखने का प्रयास करेगा कि उनके वक्तव्य उसके सामान्यीकरण में कैसे इस्तेमाल हो सकते है। हो सकता है कि सामान्यीकरण को और अधिक जटिल बनाना पड़े, हो सकता है कि उनके विचारों की विभिन्न अवस्थाओं या चरणों के लिए अलग–अलग सामान्यीकरण करने पड़े। या हो सकता है कि ऐसा सामान्यीकरण करना पड़ें या हो सकता है कि ऐसा सामान्यीकरण करना पड़ें कि उनके सिद्धान्त और व्यवहार में भिन्नता हो या किसी इतिहासकार को कहना पड़े कि उन्होंने सामान्यतः और सतत् अव्यवस्थित एवं अनियमित चिंतन किया है तब कोई यह सामान्यीकरण कर सकता है कि नौरोजी भ्रमित और असंगत थे। यह किसी भी हाल में उसक पाठक का विचार होगा जो 'अक्षरशः अनुसरणवाद' से प्रभावित रचनाएं पढ़ेगा। दूसरी और सामान्यीकरण इतिहासकार को व्याख्या में विभिन्न विकल्पों को देखने की क्षमता है।''[13] जिससे उसकी चर्चा को अधिक सुदृढ़ आधार मिलता है।

यहां हम सामान्यीकरण के उपयोग के फायदे देख सकते हैं क्योंकि नौरोजी के विचारों को पढ़ने पर ही हम आर्थिक विचारों का विश्लेषण कर पाएंगे ऐसा करना तो उनके विचारों का संग्रहण करना और उनका सारांश प्रस्तुत करना होगा।

• ''सैद्धान्तिक स्तर पर जैसे ही कोई होशोहवास में व्यक्तियों या घटनाओं का वर्गीकरण करता है, खाचों में डालता है या उनमें आपसी संबंध कायम करता है अर्थात् सामान्यीकरण करता है वैसे ही वह उसकी प्रासांगिकता या अर्थ की जांच कर सकता है।

• दरअसल, अक्सर जब दूसरे लोग किसी विषय या मुद्दे पर सामान्यीकरण कर चुके हो तब इतिहासकार दुबारा उन पर शोध करते हुए पहले के सामान्यीकरणों पर मौजूदा या नए तथ्यों के साथ कुछ आगे काम कर सकता है। इस तरह वह उन्हें लगातार संशोधित कर सकता हैं, उनको पुष्ट या अस्वीकार कर सकता है। इतिहासकार का काम आसान हो जाता है अगर वह जिन सामान्यीकरणों को जांच रहा है उनके साथ–साथ अपने सामान्यीकरण भी स्पष्ट करता चले।''[14]

• सामान्यीकरण इतिहास के विद्यार्थी को उसका विषय परिभाषित करने में मदद करते है, भले ही वह कोई लेख, गृहकार्य, शोध प्रबंध लिख रहा हो या कोई पुस्तक। वह उसे किसी किताब, लेख या प्राथमिक स्रोत से नोट्स बनाने की क्षमता प्रदान करते है। दरअसल, इतिहास के किसी विद्यार्थी के लेख या शोध प्रबंध में सामान्यीकरणों की एक श्रृंखला होनी चाहिए, भले ही वह वकतव्यों की शक्ल में हों या प्रश्नों के रूप में हों। सामान्यीकरण उसे यह क्षमता भी प्रदान करते है कि वह जान सके कि उसके कौन से नोट्स उसके शोध की विषयवस्तु के लिए महत्वपूर्ण या प्रासांगिक है।

• सामान्यीकरण शोधकर्ता को उस सब पर प्रतिक्रिया करने की क्षमता भी प्रदान करता है जो वह पढ़ता है। वह ऐसा तब कर सकता है जब वह पढ़ते–पढ़ते सामान्यीकरण कर रहा हो। ''सामान्यीकरण इतिहासकारों को बहसों के लिए प्रेरित करता है अन्यथा एक–दूसरे के कामों

के बारे में उनकी प्रतिक्रिया केवल उनकी तथ्यात्मक गलतियां दर्शाना भर रह जाता। सामान्यीकरण इतिहासकारों को बहस और विमर्शों के लिए मुद्दे रखने और उन पर लाभदायक चर्चाओं की प्रक्रिया आरंम्भ करने को प्रेरित करता है कुछ लोग किसी अन्य इतिहासकार के काम में प्रस्तुत किए गए सामान्यीकरणों से सहमत होकर उनमें नए शोध और विचार की संभावना देखते है, दूसरे लोग असहमत होते है और जिस घटना की चर्चा हो रही होती है उसकी नई और भिन्न व्याख्याएँ तलाशते है और अपने–अपने दृष्टिकोणों के लिए विभिन्न प्रमाण खोजते है। इस तरह सामान्यीकरण उनके समर्थन या विरोध में नए प्रमाणों की खोज को बढ़ावा देते है।

हम किसी सेमिनार में प्रस्तुत किए गए शोध पत्र की चर्चा कर सकते है। अगर उसमें कोई सामान्यीकरण नहीं है तो वह चर्चा का कोई आधार नहीं बना पाता। चर्चा में शामिल लोग ज्यादा से ज्यादा उस शोधपत्र में प्रस्तुत तथ्यों को नकार सकते हैं या उसमें कुछ जोड़ सकते है। सामान्यीकरण की अनुपस्थिति कुछ भारतीय इतिहास लेखन के लक्षणों में भी दिखाई पड़ती है तथा पाठक और लेखन के लक्षणों में भी दिखाई पड़ती है पाठक के पास उन पर विचार करने के लिए कुछ नहीं होता।''[15]

अनुसंधान में सामान्यीकरण

अनुसंधान में सामान्यीकरण का तात्पर्य प्राप्त निष्कर्षों के आधार पर इस प्रकार व्याख्या करना है कि न्यादर्श पर प्राप्त निष्कर्षों सम्पूर्ण जनसंख्या के लिए तथा समान परिस्थितियों में अन्य घटनाओं के लिए भी लागू हो सके। मनोवैज्ञानिक तथा शैक्षिक अनुसंधान में हमारा लक्ष्य ऐसे सिद्धान्तों, विधियों तथा उपायों की खोज करना होता है जिससे मानव–व्यवहार के सैद्धान्तिक एवं व्यावहारिक पक्षों को लाभ पहुंच सकें। मनोविज्ञान तथा शिक्षा आदि सामाजिक विज्ञानों के अनुसंधान में सामान्यीकरण के स्तर पर इसी लक्ष्य को पूर्ण करने का प्रयास होता है।

अनुसन्धान की समस्या के समाधान हेतू सामग्री का संकलन किया जाता है। एकत्रित सामग्री को बोधगम्य तथा उद्देश्यपूर्ण बनाने के लिए उसका वर्गीकरण तथा सारणीयन किया जाता है। तत्पश्चात् विश्लेषण की क्रिया प्रारम्भ होती तो है। विश्लेषण के आधार पर सामग्री से प्राप्त निष्कर्षों का सामान्यीकरण किया जाता है।''[16]

सामान्यीरकण के अन्तर्गत प्राप्त निष्कर्षों को इस प्रकार सूक्ष्म किया जाता है जिससे वे उसी के अनुरूप अन्य घटनाओं के सामूहिक स्वरूप के ऊपर लागू हों सकें अर्थात् इस तथ्य का निर्धारण करना है कि ''जिस समस्या के सम्बन्ध में उन निष्कर्षों अथवा सम्बन्धों को प्राप्त किया गया है, वे ही निष्कर्षों उसी समस्या के समान अन्य समस्याओं में भी प्राप्त होगें।

सामान्यीकरण के अनुसंधान में उद्देश्य

अनुसंधान कार्य जिस उद्देश्य की पूर्ति हेतु किया जाता है, उसकी सफलता तथा असफलता सामान्यीकरण पर ही निर्भर है। यदि अनुसंधान में उचित सामान्यीकरण नहीं है तो वह व्यर्थ है।

• सामान्यीकरण का अनुसंधान में भूत और वर्तमान घटनाओं की स्थिति को निर्धारित करना होता है।

• प्रकृति, रचना और उस क्रिया को स्थापित करना, जो घटना को स्पष्ट करते है।

• प्रगति, परिवर्तन और विकासात्मक इतिहास को प्रदर्शित करना।

• कार्य–करण सम्बन्धों को अध्ययन करना।

• अनुसंधान में सामान्यीकरण को घटना तथा तथ्य के साथ सहमति रखनी चाहिए तथा प्रत्येक घटना का सामान्यीकरण के साथ मेल होना चाहिए।

• वास्तव में अनुसंधान कार्य तथ्यों से प्रारम्भ होता है और तथ्यों पर ही समाप्त होता है अतः यह आवश्यक हो जाता है कि प्राप्त सामान्यीकरण पूर्व के तथ्यों से सहमत अथवा सम्बन्धित हो।''[17]

• सामान्यीकरण प्रत्यक्ष रूप में तथ्यों की विरोधी होते हैं।

• अनुसंधानकर्ता यह कल्पना कर लेता है कि सामग्री एकत्र करने की विधियों के लिए प्रयुक्त नाम वास्तव में उसी को प्रकट करते है जिसका मापन करते है।

• प्रकृति के नियमों के पूर्व–स्थापित सामान्यीकरण सत्य होते है। प्राप्त सामान्यीकरण को इसके साथ मेल खाना चाहिए। अनुसंधानकर्ता को इस तथ्य का ध्यान रखना चाहिए कि प्राप्त सामान्यीकरण पूर्व स्थापित सामान्यीकरण से कहीं विपरीत तो नहीं जा रहे है। इसकी महत्ता पर प्रकाश डालते हुए गुड़, बार तथा स्केट्स का कहना है।

"This test is important because if a conclusion is in conflict with a generalization already held to be turn, the disagreement must be resolved either by showing that the conflict is not real or that conflicting situation is false."

• सामान्यीकरण की धारणाओं को संक्षिप्त होना चाहिए तथा उनकी शब्दावली अत्यन्त सरल एवं स्पष्ट होनी चाहिए, साथ ही सामान्यीकरण का वर्णन करने के लिए ऐसे शब्दों का प्रयोग करना चाहिए, जो सब जगह और सभी व्यक्तियों को समान अर्थ प्रदान करें।''[18]

• समान्यीकरण ऐसा हो जिसका स्पष्टीकरण किया जा सकें। उसमें इतनी शक्ति होनी चाहिए कि कोई भी व्यक्ति स्पष्टतया उसकी वास्तविकता को परख सके।

दोषपूर्ण सामान्यीकरण को उत्पन्न करने वाली परिस्थितियां

• ''उदाहरणों की बहुत थोड़ी संख्या के ऊपर निकाला गया निष्कर्ष सामान्यीकरण को दोषपूर्ण बना देता है।

• वहीं सामान्यीकरण दोष रहित होगा जो धनात्मक तथा ऋणात्मक दोनों पक्षों को ध्यान में रखकर प्राप्त निष्कर्ष के आधार पर हो।

• यदि अनुसन्धानकर्ता ने अपने विचारों के विपरीत प्राप्त आंकड़ों अथवा प्रमाणों को छोड़कर निष्कर्ष निकाल लिया है और उनके आधार पर सामान्यीकरण करना चाहता है तो भारी भूल होगी।

• यदि अनुसंधानकर्ता किसी घटना को विभिन्न महत्वपूर्ण पक्षों पर ध्यान दे सकता है तो भी निष्कर्ष प्राप्त करने में सामान्यीकरण दोषपूर्ण होगा।''[19]

• ''अनुसन्धानकर्ता के पक्षपातपूर्ण दृष्टिकोण के कारण भी सामान्यीकरण दोषपूर्ण हो जाता है।

• यदि मापन का उपकरण अशुद्ध होगा तो उसके द्वारा प्राप्त आंकड़े और उसके आधार पर सामान्यीकरण का दोषपूर्ण होना स्वाभाविक है।''[20]

सामान्यीकरण करने में सावधानी

• ''प्रथम स्थान तथ्यों को दिया जाय।

• सिद्धान्तों का अनावश्यक विस्तार न किया जाए।

• सादृश्यता को सुझावों का प्रमाण न मानकर साधन माना जाये।

• सहमति के परीक्षण का प्रयोग करें।

• वर्णन की सत्यता के लिए सभी कथनों की जांच कर ली जाये।

• थोडे ही मामलों पर आधारित निष्कर्षों को छोड़ दिया जाये।

• सामान्यीकरण में दृष्टता और स्थिरता हो।

• संक्षिप्त पदों का प्रयोग किया जाये।''[21]

''वैज्ञानिक तथ्यों से उपयोगी निष्कर्ष निकालना ही सामान्यीकरण कहलाता है। तथ्य, अवधाराणाएं और सामान्य अनुमान वस्तुतः अन्योयाश्रित और परस्पर अन्तः निर्भर रहते है। तथ्यों से अवधारणाओं का जन्म होता है और जब विविध वैज्ञानिक प्रक्रियाओं के आधार पर तथ्य तथा अवधारणाओं का समुचित वर्गीकरण किया जाता है तो इससे साम्यानुमान या सामान्यीकरण की उपज होती है।

सामान्यतः जब एक परिकल्पना की पुष्टि हो जाती है तब उसके आधार पर वैध सामान्यीकरण द्वारा निष्कर्ष प्राप्त होता है तथा जब ऐसे सामान्यीकरण की पुष्टि ऐसे ही अन्य स्रोतों अथवा वैज्ञानिक अध्ययनों द्वारा होती है तो ऐसे प्रमाणीकृत सामान्यीकरण को ही वैज्ञानिक नियम कहते है।

व्यावहारिक शोध की उपयोगिता एवं महत्व पर प्रकाश डालते हुए स्टाउफर ने लिखा है कि यदि समाज विज्ञानों को अपना महत्व बढ़ाना है तो उन्हें अपने व्यावहारिक पक्ष को सफल बनाना होगा। स्टाउफर ने अन्यत्र लिखा है कि व्यावहारिक शोध सामाजिक विज्ञानों को तीन रूपों में महत्वपूर्ण योग देता है।

(1) कौन–से सामाजिक तथ्य किस प्रकार समाज के लिए उपयेागी है– इस बारे में विश्वसनीय प्रमाणों को प्रस्तुत करके,

(2) ऐसी प्रविधियों का उपयोग एवं विकास करके जोकि विशुद्ध शोध के लिए भी उपयोगी प्रमाणित हो, तथा

(3) ऐसे तथ्यों व विचारों को प्रस्तुत करके जो सामान्यीकरण की प्रक्रिया को आगे बढ़ायें।''[22]

सामान्यीकरण के विभिन्न रूपों में स्रोत

सामान्यीकरण प्राप्त करने के लिए न तो कोई सामान्य नियम हैं और न ही कोई मानक प्रक्रियाएं। फिर भी इस उद्देश्य के लिए कई स्रोत मौजूद है–

• ''किसी भी विशय पर उपलब्ध पिछला लेखन एक प्रमुख स्रोत है जिसमें अक्सर विभिन्न सामान्यीकरण होते है।

• एक अन्य मुख्य स्रोत विभिन्न समाज विज्ञान के विषय है जैसे व्यक्तियों के व्यवहार और उत्प्ररेण, वन व्यवहार या भीड़ का व्यवहार, परंपरा की भूमिका, परिवार की भूमिका, जातीय दृष्टिकोण और व्यवहार संबंधी सामान्यीकरण, आर्थिक सिद्धान्त एवं इतिहास, राजनीतिक व्यवस्था की कार्यप्रणाली, समाजिक नृ–विज्ञन, भाषा विज्ञान आदि–आदि। सामान्यीकरण के यह स्रोत विशेषकर महत्वपूर्ण है क्योंकि पिछले 50 वर्षों में भारत में इतिहास अध्ययन की प्रकृति में परिवर्तन हुआ है।

• इतिहास, समाज, संस्कृति और राजनीति से संबंधित मार्क्स, वेबर एवं फ्रायड के सिद्धान्त सामान्यीकरण के अन्य प्रमुख स्रेत है।

• इतिहासकार वर्तमान के अध्ययन से भी सामान्यीकरण प्राप्त करते है। उदाहरण के लिए दलितों और अन्य जाति विरोधी समूहों तथा आदिवासियों के आदोंलन। इसी तरह जन–असंतोष और विपक्षी आंदोलनों से भी भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन से जुड़े कई सामान्यीकरण मिल सकते है।''[23]

• कई सामान्यीकरण जीवन से भी प्राप्त होते है।

• इसलिए समान्यीकरण पैदा करने का कौषल तब प्राप्त होता है जब हमारा दिमाग सक्रिय होता है। हर सीखी हुई बात को करते हुए उसे सुधारने जाने से जैसे बच्चें करते है।

• धारणाओं और सामान्यीकरणों का परिमार्जन करना एक सतत् प्रक्रिया है अतः मित्रों, सहकर्मियों और प्राध्यापकों से इस पर या इनके इगगिर्द चर्चा करना बहुत आवश्यक है। किसी भी मामले में विचारों के विकास और परिमार्जन के लिए वार्तालाप आवश्यक होता है क्योंकि वार्तालाप संकल्पनाओं के बिना नहीं किया जा सकता।

• हमें अध्ययन के अपने क्षेत्र में पिछले सामान्यीकरणों की जानकारी होनी चाहिए। आलोचनात्मक जांच के बाद हमें उन्हें इस्तेमाल करने की क्षमता विकसित करनी चाहिए। अतः इतिहासकारों की वर्तमान तथा पिछली पीढ़ियों का इतिहास लेखन नितांत आवश्यक है।''[24]

''इतिहास के विज्ञान होने के पक्ष में यह कहा जा सकता है कि इतिहास स्वंय को दोहरता नहीं है। जिस प्रकार कई विज्ञान भी अध्ययन की गई प्रक्रिया को दोहरा नहीं सकते ई0 एच0कार0 ने इतिहास को विज्ञान सिद्ध करने का प्रयास किया है। उनके तर्क–

1. इतिहासकार और वैज्ञानिक के लक्ष्य और पद्धतियों मूलतः भिन्न नहीं होते है।
2. इतिहासकार अपने निष्कर्षों किसी बाह्य शक्ति पर निर्भर हुए बिना ही कर सकता है।

इतिहास मुख्यतः विशिष्ट को अध्ययन का विषय बनाता है जबकि विज्ञान सामान्य को। इस मत का प्रारम्भ अरस्तु ने किया जो यह स्वीकारता था कि इतिहास अपेक्षा काव्य अधिक गम्भीर दार्शनिकतापूर्ण होता है। कार की यह मान्यता है कि यह मत भ्रमपूर्ण है। वह हाब्स के इस कथन को अधिक मुक्तिसंगत मानता है कि इस विश्व में नामों के अलावा कुछ भी सार्वभौमिक नहीं है क्योंकि जिन चीजों को ये नाम दिए जाते है उनमें से प्रत्येक चीज व्यक्तिपरक और विशिष्ट होती है। भौतिक विज्ञानों के लिए यह बात पूर्णतः सत्य है क्योंकि दो भूगर्भ पदार्थ एक ही जाति के दो पशु और कोई भी दो अणु एकदम समान नहीं होते है।

ठीक उसी प्रकार कोई दो ऐतिहासिक घटनाएं भी समान नहीं होती, लेकिन अब भाषा का प्रयोग किया जाता है तो इतिहासकार को भी वैज्ञानिक की तरह सामान्यीकरण करना पड़ता है इतिहास की पूर्व कल्पना नहीं की जा सकती। इतिहास में भी सामान्यीकरण किये जाते है और भावी क्रिया के लिए साधारण निर्देश तैयार किये जाते है। ये विशेष घटनाओं के बारे में भविष्यवाणी नहीं होती क्योंकि विशेष घटनाएं तो अद्वितीय होती है जिनमें संयोग का तत्व शामिल होता है।''[25]

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. चन्द्रा, विपिन, इतिहास लेखन, इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय सामाजिक विज्ञान विद्यापीठ, ईकाई प्रथम, प्रथम संस्करण 2006

2. राय, कौलेष्वर, इतिहास दर्शन, किताब महल, इलाहाबाद, दषम संस्करण, 2004

3. कार, ई0एच0, इतिहास क्या है, पैरन्टी पबि0, नई दिल्ली, द्वितीय संशोधित संस्करण, 2014

4. खुराना, के0एल0 और बंसल, आर0के0, इतिहास–लेखन धारणाएं तथा पद्धतियां, लक्ष्मी नारायण अग्रवाल पबि0 आगरा, 6वां संशोधित, संस्करण 2009

5. गुप्ता, एम0एल0, समाजशास्त्र, साहित्य भवन पबि0 आगरा, प्रथम संशोधित संस्करण, 2002

6. सिंह, परमानन्द, इतिहास दर्शन, मोतीलाल बनारसी दास, नई दिल्ली, तृतीय संस्करण, 2004

7. राय, पारसनाथ, अनुसंधान परिचय, लक्ष्मी नारायण अग्रवाल, पबि0 आगरा, 13वां संषोधित, संस्करण 2012

8. सिंह, गया, कुमार अनिल, शैक्षिक अनुसंधान की विधियां, आर0 लाल बुक डिपो, मेरठ, प्रथम संस्करण, 2013

9. चौबें, झारखण्ड, इतिहास दर्शन, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, तृतीय संस्करण, 2001

10. त्रिवेदी, आर0एन0, शुक्ला, डी0पी0, रिसर्च मैथोडोलॉजी, कॉलेज बुक डिपो, जयपुर

11. गुप्ता, एम0एल0, शर्मा, डी0डी0, सामाजिक अनुसंधान, साहित्य भवन पबि आगरा, प्रथम संस्करण, 2005

12. गुप्त, लाल मानिक, इतिहास लेखन, धारणायें एवं पद्धतियों, अमित पबि0, कानपुर, प्रथम संस्करण, 2004

13. माथुर, एस0के0, त्रिपाठी, डी0सी0, इतिहास लेखन की अवधारणा एवं आधुनिक विचारधाराएं, रिसर्च पबि0, जयपुर ।